एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कद्दुवर्गीय फसलों में सूत्रकृमि से होने वाले रोग एवं उनको नियन्त्रण करने के उपाय

(*रामस्वरूप जाट[1] एवं बाबू लाल चौधरी[2])
[1]राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविधालय, ग्वालियर, (म.प्र.)
[2]कृषि अनुसंधान अधिकारी, डेगाना, नागौर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: rschandiwal@gmail.com

जड़गाँठ रोग (कदुवर्गीय)

कुष्माण्ड कुल की प्रायः सभी फसलों में सूत्रकृमि का प्रकोप देखा गया है। वैसे तो भारत में यह रोग, न्यूनाधिक सभी प्रदेशों में पाया जाता है। परन्तु राजस्थान व अन्य हल्की बलुई मिट्टी वाले क्षेत्रों में इस रोग का प्रकोप अधिक होता है।

लक्षण

रोग से ग्रस्त पौधों की पत्तियाँ पीली पड़कर आकार में कुछ छोटी रह जाती है तथा पौधे की बढ़वार रूक जाती है। दिन के समय पूरा पौधा (बेल) मुरझा जाता है। ऐसे पौधों में फल बहुत कम या बिल्कुल नही लगते है। रोगग्रस्त बेल को उखाड़ कर देखने पर उसकी जड़ों का मूलरूप पूर्णतया विकृत दिखाई देता है। मुख्य एवं द्वितीयक जड़ों सहित संपूर्ण मूलतंत्र में छोटी बड़ी अनेकों गोल, अण्डाकार या अनियमित आकार की गांठे बन जाती है। इनका रंग सामान्यतः हल्का भूरा परन्तु कभी कभी गहरा भूरा होता है। रोग ग्रस्त जड़ो में धीरे धीरे मृदोढ कवकों एवं जीवाणुओं का संक्रमण हो जाता है।

रोगजनक

रोगजनक सूत्रकृमि की दोनों जातियाँ, मेलोइडोगाइनी इन्कोग्निटा एवं मे. जैवेनिका मिटट्री में स्वतंत्र रूप से अथवा रोगी पौधों के मूल अवशेषों में विद्यमान रहती है। यह रोगजनक व्यापक परपोषी परिसर वाला होने के कारण अन्य फसलों एवं खरपतवारों की जड़ो में संक्रमण कर वर्ष–प्रतिवर्ष जीवित अवस्था में उपलब्ध रहता है तथा कुष्माण्ड फस्ल उपलब्ध होने पर फसल की किसी भी अवस्था में जड़ों को संक्रमित कर सकता है।

रोग प्रबन्धन

1. उचित फसल चक्र अपनायें, फसल चक्र में धान, जई, गेहूँ तथा तारामीरा जैसी फसलों का समावेश करें ।
2. पूर्व में रोगग्रस्त रहे खाली खेतों की मई–जून माह में 2 से 3 बार गहरी जुताई करके खुला छोड़ दें अथवा संभव हो तो पोलीथीन शीट से ढ़कें ।
3. क्षेत्रानुसार उपलब्ध रोग प्रतिरोधी किस्मों का प्रयोग करें ।
4. भूमि में कार्बनिक पदार्थों की कमी से सूत्रकृमियों का प्रकोप बढ़ जाता है। अतः कम्पोस्ट, गोबर की सड़ी हुई खाद तथा नीम अरण्डी, सरसों आदि तिलहनों की खली का प्रयोग लाभकारी रहता है।
5. बुवाई पूर्व, अन्तिम जुताई के समय खेत में फ्यूराडान–3 जी (25 से 30 किग्रा./है) डालें ।

Host: Cucumber
Disease: Root knot
Pathogen: Root-knot nematodes (Meloidogyne sp.)